University in News on 04 August 2025

AMAR UJALA MY CITY PAGE 7

स्नातक व परास्नातक ऑनलाइन पाठ्यक्रमों के लिए आवेदन 10 से

माई सिटी रिपोर्टर

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय में शैक्षिक सत्र 2025-26 के लिए नौ पाठ्यक्रमों की ऑनलाइन शिक्षा में प्रवेश के लिए आवेदन 10 अगस्त से शुरू होंगे। लखनऊ विश्वविद्यालय प्रशासन ने ऑनलाइन पाठ्यक्रमों में प्रवेश से संबंधित ब्रोशर जारी कर दिया है।

लविवि के सेंटर फॉर ऑनलाइन एंड डिस्टेंस एजुकेशन (एलयूसीओडीई) के तहत नौ ऑनलाइन पाठ्यक्रमों में प्रवेश होना है। इसके तहत एमबीए, बीबीए, एमए

लखनऊ विश्वविद्यालय : कुल नौ पाठ्यक्रमों में होना है प्रवेश, नौकरी के साथ कर सकेंगे पढ़ाई भी

इंग्लिश, एम काम, मास्टर ऑफ सोशल वर्क, एमए पॉलिटिकल साइंस, एमए संस्कृत, एमए इकोनामिक्स, बीकाम में प्रवेश लिए जाएंगे। सेंटर फॉर ऑनलाइन एंड डिस्टेंस एजुकेशन के निदेशक प्रो. पीयूष भार्गव ने बताया कि सत्र 2025-26 के इन सभी नौ ऑनलाइन पाठ्यक्रमों के लिए निर्धारित अर्हता पूरी करने वाले नौकरी पेशा से लेकर कोई भी अभ्यर्थी प्रवेश ले सकते हैं।

ऐसे कर सकते हैं आवेदन : इन पाठ्यक्रमों के लिए आवेदन फीस 250 रुपये रखी गई है। अभ्यर्थी को यूजीसी की वेबसाइट के जरिये डिस्टेंस एजुकेशन ब्यूरो (डीईबी) पोर्टल पर पंजीकरण कराकर आईडी बनानी होगी। इसके बाद लविवि की वेबसाइट https:// www.luonlineeducation.in/ के जरिए आवेदन करना होगा।

कोर्स और उनकी निर्धारित फीस

कोर्स	ट्यूशन फीस	परीक्षा शुल्क	कोर्स	ट्यूशन फीस	परीक्षा शुल्क
एमबीए	25000	4000	एमए पॉलिटिकल साइंस	8000	2000
बीबीए	15000	4000	एम.ए संस्कृत	8000	2000
एम.ए इंग्लिश	8000	2000	एम.ए इकोनामिक्स	8000	2000
एम. काम	8000	2000	बीकॉम	5000	1750
एमएसडब्ल्यू	8000	2000			

HINDUSTAN PAGE 10

ऑनलाइन कोर्स में 10 से करें आवेदन

लखनऊ, संवाददाता। लखनऊ विश्वविद्यालय के सेंटर फॉर ऑनलाइन एंड डिस्टेंस एजुकेशन (एलयूसीओडीई) में शैक्षिक सत्र 2025-26 के तहत नौ ऑनलाइन पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए आवेदन प्रक्रिया 10 अगस्त से शुरू होगी। शनिवार को विश्वविद्यालय प्रशासन ने इसका एडमिशन ब्राशर जारी किया।

सेंटर के निदेशक प्रो. पीयूष भार्गव ने बताया कि सत्र 2025-26 के ऑनलाइन पाठ्यक्रमों में स्नातक में बी.काम और बीबीए के साथ ही परास्नातक में एम.काम, एम.ए इंग्लिश, एम.ए इकोनामिक्स, एम.ए संस्कृत, एम.ए पालिटिकल साइंस, मास्टर आफ सोशल वर्क (एमएसडब्ल्यू) और एमबीए में प्रवेश लिए जाएंगे। इस कोर्स में एलयू की निर्धारित अर्हता पूरी करने वाले नौकरी पेशा से लेकर कोई भी अभ्यर्थी प्रवेश ले सकते हैं। आवेदन शुल्क 250 रुपये है। सबसे पहले अभ्यर्थी को यूजीसी की वेबसाइट के माध्यम से डिस्टेंस एजुकेशन ब्यूरो पोर्टल पंजीकरण करा एबीसी आइडी बनानी होगी। www.luonlineeducation.in/ से आवेदन होगा।

एलयू के पाठ्यक्रम और शुल्क विवरण (रुपये में)

कोर्स का नाम	ट्यूशन फीस	परीक्षा शुल्क
बीकाम	5,000	1,750
बीबीए	15,000	4,000
एम. काम	8,000	2,000
एमबीए	25,000	4,000
एम.ए इकोनामिक्स	8,000	2,000
एम.ए इंग्लिश	8,000	2,000
एमएसडब्ल्यू	8,000	2,000
एमए पालिटिकल साइंस	8,000	2,000
एम.ए संस्कृत	8,000	2,000

JAGRAN CITY PAGE I, III

शुगर की बीमारी होगी या नहीं, बताएगा माइक्रो आरएन बायोमार्कर

अखिल सक्सेना • जागरण

लखनऊ: खान पान का तरीका सही न होने से लोगों में शुगर की बीमारी होने की संभावना बढ़ जाती है। इन बढ़ते मामलों को देखते हुए लखनऊ विश्वविद्यालय के जंतु विज्ञान विभाग के शोधार्थी आश्विन कुमार शुक्ला ने प्रोफेसर मोनिषा बनर्जी के नेतृत्व में शोध कर ऐसे माइक्रो आरएनए बायोमार्कर खोजे हैं, जिससे यह पता लगाना आसान होगा कि भविष्य में किसी व्यक्ति को शुगर होने का खतरा है या नहीं।

इस अध्ययन में कुछ विशिष्ट माइक्रो-आरएनए को डायबिटिक और प्री-डायबिटिक की स्थिति को सामान्य व्यक्तियों से अलग करने के लिए संभावित बायोमार्कर के रूप में पहचाना गया है। यह खोज डायबिटीज के प्रबंधन और उपचार के लिए नए रास्ते खोल सकती है। उनका यह शोध हाल ही में अंतरराष्ट्रीय पब्लिशर स्प्रिंजर नेचर के मालीकुलर बायोलाजी रिपोर्ट जर्नल में प्रकाशित हुआ है।

शोधार्थी आश्विन शुक्ला बताते हैं कि पहले 40 से 50 साल की उम्र वाले शुगर से पीड़ित होते थे। अब कम उम्र यानी 25 साल वालों में भी यह बीमारी हो रही है। कई बार बीमारी का पता ही नहीं चलता। इसलिए 2023 में इस पर शोध शुरू किया। किंग जार्ज मेडिकल यूनिवर्सिटी (केजीएमयू) के मेडिसिन विभाग के डा. कौसर उस्मान के सहयोग से 2023 नवंबर से 2024 अक्टूबर तक तीन तरीके के लोगों का डेटा इकट्ठा किया, जिसमें जंतु विज्ञान विभाग की शोधार्थी कोमल अवस्थी का भी सहयोग रहा। ओपीडी से प्री-डायबटिक 20, डायबटिक 40 और सामान्य प्रकार के 44 लोगों के खून के नमूने लिए गए।

ऐसे हुआ शोध

लवि की मालिक्युलर एंड ह्यूमन जेनेटिक लैब में खून के नमूनों से सीरम अलग किया गया। प्राप्त सीरम में किट की सहायता से माइक्रो आरएनए को निकाल कर आइसीएमआर के डायबिटीज परियोजना से खरीदे गए आरटीपीसीआर के जरिए तीनों माइक्रो आरएनए का स्तर देखा। शोध में शामिल प्री-डायबिटिक, डायबिटिक एवं सामान्य लोगों के डायबिटीज और लिपिड प्रोफाइल की जांच की गई, जिनमें डायबिटिक व्यक्तियों में प्री-डायबिटिक और सामान्य समूह की तुलना में एफपीजी (फास्टिंग प्लाज्मा ग्लूकोज) और एचबीए-1 सी (हीमोग्लोबिन ए-1 सी) का स्तर काफी अधिक पाया गया। शुगर पीड़ित वालों में फास्टिंग शुगर और एचबीए-1 सी अधिक था।

25 वर्ष के युवा भी शुगर की गिरफ्त में आ रहे हैं। पहले 40 से 50 वर्ष की उम्र में होते थे पीड़ित

लवि के मालिक्युलर एंड ह्यूमन जेनेटिक लैब में आरटीपीसीआर मशीन से नमूनों की जांच करते हुए शोधार्थी आश्विन कुमार शुक्ला • सौजन्य से स्वयं

शोध में सामने आए तथ्य

शोध में तीन बायोमार्कर का पता चला, जिनमें एचएसए-एमआइआर-513ए-3पी, एचएसए-एमआइआर-377-3पी और एचएसए-एमआइआर-30बी-5पी माइक्रो आरएनए शामिल है। खासकर एचएसए-एमआइआर-30बी-5पी माइक्रो आरएनए सामान्य और मधुमेह से ग्रस्त व्यक्तियों के बीच अंतर करने के लिए एक प्रभावी बायोमार्कर के रूप में उभरा है। भविष्य में इन माइक्रो-आरएनए का उपयोग मधुमेह और पूर्व-मधुमेह के शीघ्र निदान में क्रांति ला सकता है। यह शोध यह बताने में मदद करेगा कि भविष्य में किसी व्यक्ति को शुगर होने का खतरा है या नहीं। इससे समय पर हस्तक्षेप और जटिलताओं को रोका जा सकेगा।

आठ को एकेडमिक काउंसिल, कई प्रस्ताव पर होगी चर्चा

जागरण संवाददाता • लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय में आठ अगस्त को एकेडमिक काउंसिल की बैठक आयोजित की जाएगी। इसमें एक वर्षीय परास्नातक पाठ्यक्रम के सिलेबस से लेकर कई प्रस्ताव पर मुहर लगेगी। कुलपति प्रोफेसर मनुका खन्ना ने बताया कि लवि में पहली बार एक वर्षीय पीजी कोर्स में प्रवेश शुरू होने हैं। एनईपी के अनुसार इसका सिलेबस तैयार हो गया है, जिसे बैठक में इस पर चर्चा के लिए रखा जाएगा। यह उन विद्यार्थियों के लिए होगा जो चार वर्षीय स्नातक कोर्स किया है। एक वर्ष के इस कोर्स के बाद उन्हें पीजी की डिग्री मिलेगी। यह कोर्स शोध की ओर बढ़ावा देने वाला है। इसके अलावा बैठक में पीएच.डी अध्यादेश में कुछ संशोधन आदि प्रस्ताव भी रखे जाएंगे।

लवि में बनी कम्युनिटी एजुकेशनल डेवलपमेंट सेल

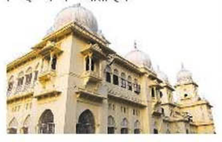

जासं • लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय ने समाज कार्य विभाग के अध्यक्ष प्रो. राकेश द्विवेदी की अध्यक्षता में कम्युनिटी एजुकेशनल डेवलपमेंट सेल का गठन किया है। इसमें अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. वीके शर्मा और एजुकेशन विभाग की प्रो. अपर्णा गोडगोले भी शामिल हैं। कुलपति प्रो. मनुका खन्ना ने बताया कि इस सेल के माध्यम से समाज के सहयोग से

सामाजिक विकास या किसी खास सेक्टर में और अधिक कार्य करेंगे। अभी पांच गांव गोद लेकर वहां कार्य किया जा रहा है। आगे इसकी संख्या और बढ़ाने की योजना है।

NBT PAGE 4

विदेशी छात्रों के लिए एंबेसी की NOC जरूरी

एलयू में लागू की गई व्यवस्था, स्टूडेंट सीधे नहीं ले पाएंगे दाखिला

NBT रिपोर्ट, लखनऊ: लखनऊ विश्वविद्यालय में अब एंबेसी की एनओसी के बिना विदेशी छात्रों को दाखिला नहीं दिया जाएगा। विवि में अगर कोई विदेशी छात्र सीधे दाखिले के लिए आवेदन करता है तो उसे भी एंबेसी की एनओसी जमा करना अनिवार्य कर दिया गया है। सुरक्षा कारणों से एलयू की ओर से यह बदलाव किया गया है। ताकि अगर किसी विदेशी छात्र के साथ अनहोनी हो जाए या वह किसी अन्य गतिविधि में लिप्त पाया जाए तो एंबेसी उस पर कार्रवाई कर सके। विवि के इंटरनैशनल स्टूडेंट एडवाइजर प्रो. आरपी सिंह ने बताया कि इस नियम को लागू कर दिया गया है।

विवि में इंडियन काउंसिल फॉर कल्चरल रिलेशन की ओर से विदेशी छात्रों के दाखिले लिए जाते हैं। इसमें काउंसिल की ओर से स्पॉन्सर सीट पर विदेशी छात्रों को दाखिला मिलता है। इसके अलावा एंबेसी की ओर से स्पॉन्सर सीट पर भी विदेशी छात्रों को दाखिला दिया जाता है।

सीटें भरने के लिए बढ़ाई LURN की तारीख

NBT रिपोर्ट, लखनऊ: लखनऊ विश्वविद्यालय से संबद्ध कई डिग्री कॉलेजों में दो महीने बाद भी आधी सीटें नहीं भर सकी है। ऐसे कॉलेजों में दाखिलों का आंकड़ा बढ़ाने के लिए एलयू ने एलयूआरएन रजिस्ट्रेशन की आखिरी तारीख बढ़ा दी है। पहले इसकी आखिरी तारीख 31 जुलाई थी। अब स्टूडेंट 15 अगस्त तक एलयूआरएन रजिस्ट्रेशन करवा सकेंगे। एलयू और इससे संबद्ध कॉलेजों में दाखिले के लिए एलयू रजिस्ट्रेशन नंबर (LURN)होने पर ही आवेदन किया जा सकता था। पहले परीक्षा फॉर्म भरने तक कॉलेजों में दाखिले चलते थे, लेकिन अब किसी स्टूडेंट का एलयूआरएन होने पर दाखिला हो सकता है। ऐसे में विवि ने दाखिले बढ़ाने के लिए एलयूआरएन पोर्टल 15 अगस्त तक खोलने का फैसला किया है। विवि के प्रवक्ता दुर्गेश श्रीवास्तव ने बताया कि एलयूआरएन पोर्टल 15 अगस्त तक खोला गया है।

BBAU: डिप्लोमा इन ट्रांसलेशन में आवेदन 5 से

NBT रिपोर्ट, लखनऊ: बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग की ओर से संचालित डिप्लोमा इन ट्रांसलेशन में पांच अगस्त से आवेदन प्रक्रिया शुरू हो रही है। अभ्यर्थी बीबीएयू की वेबसाइट https://www.bbau.ac.in/ पर ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। अब तक यह पाठ्यक्रम सिर्फ लखनऊ विश्वविद्यालय में संचालित किया जाता था जबकि अब बीबीएयू में भी इसकी शुरुआत की गई है। यह पाठ्यक्रम दो सेमेस्टर का है जिसमें कुल 40 सीटें हैं। पाठ्यक्रम की फीस 8500 रुपये प्रति सेमेस्टर तय की गई है। जबकि आवेदन शुल्क सामान्य व ओबीसी अभ्यर्थियों के लिए 500 रुपये और एससी-एसटी के लिए 300 रुपये निर्धारित किया गया है। अभ्यर्थी सरकारी या निजी संस्थानों में अनुवादक व हिंदी अधिकारी जैसे पदों पर काम कर सकते हैं।

AMRIT VICHAR PAGE 6

लविवि स्नातक और परास्नातक के ऑनलाइन कोर्स में 10 से करें आवेदन

अमृत विचार, लखनऊ: लखनऊ विश्वविद्यालय के सेंटर फॉर ऑनलाइन एंड डिस्टेंस एजुकेशन (एलयूसीओडीई) में शैक्षिक सत्र 2025-26 के तहत नौ ऑनलाइन पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए आवेदन प्रक्रिया 10 अगस्त से शुरू होगी। विश्वविद्यालय प्रशासन ने इसका विस्तृत रुपरेखा जारी कर दिया है। सेंटर के निदेशक प्रो. पीयूष भार्गव ने बताया कि सत्र 2025-26 के ऑनलाइन पाठ्यक्रमों में स्नातक में बीकाम और बीबीए के साथ ही परास्नातक में एमकाम, एमए इंग्लिश, एमए इकोनामिक्स, एमए संस्कृत, एमए पालिटिकल साइंस, मास्टर आफ सोशल वर्क (एमएसडब्ल्यू) और एमबीए में प्रवेश लिए जाएंगे। इन पाठ्यक्रमों में निर्धारित अर्हता पूरी करने वाले नौकरी पेशा से लेकर कोई भी अभ्यर्थी प्रवेश ले सकते हैं। आवेदन शुल्क मात्र 250 रुपये है।

i-NEXT PAGE 4

कम्युनिटी एजुकेशनल डेवलपमेंट सेल

LUCKNOW (3 AUG): लखनऊ विश्वविद्यालय ने समाज कार्य विभाग के अध्यक्ष प्रो. राकेश द्विवेदी की अध्यक्षता में कम्युनिटी एजुकेशनल डेवलपमेंट सेल का गठन किया है. इसमें अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. वीके शर्मा और एजुकेशन विभाग की प्रो. अपर्णा गोडगोले भी शामिल हैं. वीसी प्रो. मनुका खन्ना ने बताया कि इस सेल के माध्यम से समाज के सहयोग से सामाजिक विकास या किसी खास सेक्टर में और अधिक कार्य करेंगे. अभी पांच गांव गोद लेकर वहां कार्य किया जा रहा है. आगे इसकी संख्या और बढ़ाने की योजना है.